2 अगस्त 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

समस्त सांसारिक दु:खों को दूर करने के इलाज का नाम ही जैनधर्म है, मोक्षमार्ग है तथा वीतरागी परमात्मा और उनके मार्गानुसार चलने वाले संत ज्ञानीजन ही सच्चे डॉक्टर हैं।
– चिंतन की गहराईयाँ , पृष्ठ 176

वर्ष : 43, अंक : 9
अगस्त (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के पावन प्रसंग पर –

43वाँ आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में आयोजित 43वाँ आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 19 जुलाई से मंगलवार, दिनांक 28 जुलाई, 2020 तक सानन्द संपन्न हुआ।

सौभाग्यशाली परिवार – ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी परिवार जयपुर ने एवं शिविर उद्घाटन श्री अशोककुमार चक्रेशकुमार सुशीलकुमार (मुन्नाभैया) बजाज परिवार कोलकाता ने किया। तत्पश्चात् श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ द्वारा गुरुदेवश्री के चित्रों का अनावरण किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलजी गोदिका ने की। सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, कार्यक्रमों की जानकारी श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, संस्था का परिचय पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

शिविर के सारथी – इसका सौभाग्य श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री राहुलजी महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर, श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी के साथ ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर को प्राप्त हुआ।

समारोह में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री पवनजी स्वप्निलजी जैन अलीगढ, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री गजेन्द्रजी पाटनी मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्री चम्पालालजी भण्डारी बैंगलोर, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री अशोकजी अरिहंत कैपिटल इन्दौर आदि अनेक श्रेष्ठीगण उपस्थित थे।

विशिष्ट विद्वत्समागम – शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर मार्मिक व्याख्यानों के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित संजयजी जेवर कोटा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

कक्षाएं – शिविर में प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा सम्यग्दर्शन के लक्षण, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का प्रतिषेध, पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा वांचने सुनने योग्य शास्त्र और वक्ता व श्रोता

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

मंगल समाचार *देखना ना भूलें*
डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार (निर्जराधिकार) पर प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
15 जुलाई, 2020 से प्रतिदिन
प्रात: 6:10 से 6:40 तक
अरिहन्त चैनल उपलब्ध है
Tata Sky - 1067
Airtel - 687
Dishtv - 1107
GTPL - 568
Dish Free to air - 79
Hethway - 840
इसका पुन: प्रसारण ptst के यूट्यूब चैनल पर भी दोपहर 2:30 बजे से 3:00 बजे तक किया जायेगा।
यूट्यूब पर ही 3 से 4 बजे तक प्रवचनसार का प्रवचन पहले की भांति चलता रहेगा।

② सम्पादकीय

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

मोक्षमार्गप्रकाशक एवं उसकी विषयवस्तु –

मोक्षमार्ग प्रकाशक पण्डित टोडरमलजी की मौलिक रचना है, जिसे उन्होंने सैंकड़ों जैन/अजैन ग्रन्थों का सूक्ष्मता से अध्ययन कर संस्कृत और प्राकृत से अनभिज्ञ आत्मार्थियों के लिये लिपिबद्ध किया। यद्यपि इसकी रचना अल्पबुद्धि वाले जिज्ञासु जीवों के लिये की गई; तथापि विद्वत्वर्ग में व्याप्त सूक्ष्म भूलों का निराकरण भी इसमें बहुत ही तर्क एवं युक्ति की कसौटी पर कसकर किया गया है।

इस ग्रन्थ के निर्माण में पण्डितजी की धर्मानुराग रूप अन्त:प्रेरणा ही कारगर प्रतीत होती है। उन्हें कोई लौकिक आकांक्षा नहीं थी। धन, यश और सम्मान की चाह तथा नवीन पंथ चलाने का व्यामोह भी उनके हृदय में नहीं था। ग्रन्थ लिखने का औचित्य सिद्ध करते हुये उन्होंने स्वयं लिखा – जिनको व्याकरण-न्यायादि का व नय-प्रमाणादि का ज्ञान नहीं होने से बड़े ग्रन्थों का अभ्यास नहीं बन पाता तथा छोटे ग्रन्थों से यथार्थ अर्थ भासित नहीं होता, उनका भला होने के हेतु धर्मबुद्धि से यह भाषामय ग्रन्थ बनाता हूँ।

उपलब्ध मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ में नौ अधिकार हैं। प्रारम्भ के आठ अधिकार तो पूर्ण हैं; जबकि अन्तिम नौवाँ अधिकार पण्डित जी की आयु पूर्ण हो जाने से अपूर्ण रह गया है। पण्डितजी का वर्ण्य विषय मोक्षमार्ग का प्रकाशन करना अर्थात् रत्नत्रय था। इसमें से उन्होंने नौवें अधिकार में मोक्षमार्ग के प्रथम चरण सम्यग्दर्शन का स्वरूप वर्णन करना प्रारंभ किया। इसप्रकार सही मायने में तो नौवें अधिकार से ही इस ग्रन्थ का प्रारंभ हुआ है। इसी आधार पर यह भी कहा जा सकता हैं कि प्रारंभ के आठ अधिकार तो ग्रन्थ की भूमिका मात्र हैं।

नौवें अधिकार में जिसप्रकार मोक्षमार्ग के स्वरूप का वर्णन प्रारम्भकर सम्यग्दर्शन के विषय को उठाया गया, उसके अनुसार तो वे कुछ भी वर्णन नहीं कर सके। सिर्फ सम्यग्दर्शन के लक्षण, उसके भेद और स्वरूपों का कुछ वर्णन करके आठ अंग और 25 दोषों के नाम मात्र गिनाए जा सके हैं, इनका कुछ भी वर्णन नहीं हो सका। अंतिम पृष्ठ पर अंतिम शब्द ''बहुरि'' भी बहु.... मात्र लिखा जाकर अधूरा रह गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में बारह स्थानों पर ऐसे संकेत हैं कि –'इसका विशेष वर्णन आगे करेंगे, वहाँ से जानना'। प्राप्त संकेतों एवं उपलब्ध विषय वर्णन को देखकर आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने मोक्षमार्ग प्रकाशक की संभावित रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए यह अनुमान व्यक्त किया कि यदि यह ग्रन्थ निर्विघ्नरूप से पूर्ण होता तो लगभग पाँच हजार पृष्ठों का होता। पण्डित टोडरमलजी ने मानों समूचे मोक्षमार्ग को जनभाषा में प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक संकल्प लिया था। उनके हृदय में ग्रन्थ का कैसा विराट स्वरूप उभर रहा होगा ? वे आगे क्या लिखना चाहते थे ? यह तो उनके ही मन-मस्तिष्क में था, जो उनके साथ ही चला गया। दुर्भाग्य से उनकी पर्याय पूरी हो गई और कृत संकल्प की आंशिक पूर्ति भी नहीं हो सकी; फिर भी जो हमारे पास उपलब्ध है, वह भी आत्मकल्याण के लिये पर्याप्त है। बस जरूरत है, उसका चिन्तन/मंथन करने की, उसे हृदयंगम करने की। **(क्रमश:)**

परमागम ऑनर्स की विशेष संगोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत परमागम ऑनर्स द्वारा दिनांक 26 जुलाई को **मोक्षमार्ग प्रकाशक की मौलिक विशेषताएं एवं मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि** विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम संचालनकर्ता विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई द्वारा परमागम ऑनर्स का परिचय दिया गया। तत्पश्चात् डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 'जीव की कर्मोदयजन्य अवस्था और उसका मूलकारण', डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा 'मिथ्यात्व का निरूपण और राग-द्वेष की महिमा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा अनुयोगों का सुमेल एवं विदुषी स्वानुभूति जैन द्वारा सम्यग्दर्शन का सच्चा लक्षण विषय पर सारगर्भित संक्षिप्त मार्मिक व्याख्यान हुआ। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा जैन मिथ्यादृष्टि विषय पर मार्मिकउद्बोधन प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का मंगलाचरण बीजल शेठ ने किया। इस प्रसंग पर विश्वभर में चल रहे परमागम ऑनर्स के परीक्षा परिणाम भी घोषित किये गये।

महाविद्यालय स्थापना समारोह संपन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की स्थापना दिनांक 24 जुलाई, 1977 को हुई। इसके 43 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्थापना समारोह आयोजित किया गया, जिसमें प्रात:काल सर्वप्रथम डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने महाविद्यालय का परिचय दिया तथा सायंकाल प्रथम प्रवचन के पश्चात् एक वीडियो के माध्यम से महाविद्यालय का विहंगावलोकन कराया गया। तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई के उद्बोधन का लाभ मिला।

43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत -

विभिन्न संगोष्ठियाँ सानन्द संपन्न

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दोपहर में विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन हुआ।

● **पहला अधिकार** - दिनांक 20 जुलाई को पीठबंध प्ररूपक प्रथम अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं विशिष्ट अतिथि श्री विपुलभाई कांतिभाई मोटानी मुम्बई थे।

गोष्ठी में पण्डित अंकुरजी जैन खड़ैरी ने जिनशासन के संरक्षक : पण्डितप्रवर टोडरमलजी, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर ने पंचपरमेष्ठियों के वर्णन में टोडरमलजी की विशेषता, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल ने क्या अरहंतादि से लौकिक प्रयोजन की सिद्धि होती है?, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर ने जिनवाणी सुनने की पात्रता विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण विदुषी परिणति जैन विदिशा ने एवं संचालन पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

● **द्वितीय अधिकार** - दिनांक 21 जुलाई को संसार अवस्था का प्ररूपक द्वितीय अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, मुख्य अतिथि श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि श्री अतुलभाई खारा अमेरिका थे।

गोष्ठी में पण्डित अमनजी जैन आरोन ने बंध-प्रक्रिया में पहले द्रव्यकर्म या भावकर्म?, पण्डित चर्चितजी शास्त्री कोटा ने बंध प्रकरण में भी अध्यात्म की परिचायक टोडरमलजी की शैली, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ ने जिन्हें बंध नहीं करना हो वे कषाय नहीं करें, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने सुख-दु:ख का मूल बलवान कारण कौन? विषय पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ ने एवं संचालन विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर ने किया।

● **तृतीय अधिकार** - दिनांक 22 जुलाई को संसार दु:ख और मोक्षसुख का निरूपक तृतीय अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, मुख्य अतिथि श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा थे।

गोष्ठी में पण्डित पल त्रिवेदी गांधीनगर ने भ्रमजनित दु:ख का उपाय भ्रम दूर करना ही है, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर ने चहुंगति दु:ख अपारा, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री पुणे ने दु:ख के मूल कारण चार प्रकार की इच्छाएं एवं पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री चेन्नई ने मोक्ष ही सुखरूप क्यों? विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने एवं संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

● **चौथा अधिकार** - दिनांक 23 जुलाई को मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का निरूपक चतुर्थ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. किरणजी शाह पुणे थे।

गोष्ठी में पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय भोपाल ने जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व सरधैं तिनमांही विपर्ययत्व, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई ने मिथ्याज्ञान का कारण कौन?, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर ने कषाय करना ऐसा है जैसे जल का बिलौना एवं डॉ. उमापतिजी शास्त्री चेन्नई ने मोह की महिमा विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम ने एवं संचालन पण्डित नीशूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● **छठवाँ अधिकार** - दिनांक 24 जुलाई को कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का प्रतिषेधक छठवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष ब्र. अभिनन्दनजी देवलाली, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, मुख्य अतिथि श्री संजयजी दीवान सूरत एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा थे।

गोष्ठी में पण्डित नीतेशजी शास्त्री झालरापाटन ने जगत के देव सब देखे कोई रागी कोई द्वेषी, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा ने ते कुगुरु जन्म जल उपल नाव, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने कुधर्म सेवन में मिथ्याभाव एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी ने अहो! देव-गुरु-धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने एवं संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

● **सातवाँ अधिकार (प्रथम)** - दिनांक 25 जुलाई को जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचक सातवाँ अधिकार (प्रथम) विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर एवं थे।

गोष्ठी में पण्डित अखिलजी जैन मण्डीदीप ने रागादि मिटाने का श्रद्धानादि ही मोक्षमार्ग, डॉ. अंकितजी शास्त्री लूणदा ने व्यवहाराभासी की सामान्य प्रवृत्ति, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर ने तत्त्वों की भावभासना से ही सम्यग्दर्शन एवं डॉ. राजेन्द्रजी सांगावे उगार कर्नाटक ने आत्मज्ञान शून्य आगमज्ञान कार्यकारी नहीं विषय पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली ने एवं संचालन पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

● **सातवाँ अधिकार (द्वितीय)** - दिनांक 26 जुलाई को जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचक सातवाँ अधिकार (द्वितीय) विषय पर आयोजित

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री अशोकजी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि श्री वीरेशजी कासलीवाल सूरत थे।

गोष्ठी में पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना ने सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि दृढचारित लीजै, पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली ने उभयाभासी के प्रकरण में टोडरमलजी की मौलिकता, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल जयपुर ने देखो! तत्त्वविचार की महिमा एवं डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने परिणामन की सम्हाल में गाफिल मत हो प्राणी विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित संजीवजी दिल्ली ने एवं संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● **आठवाँ अधिकार** – दिनांक 27 जुलाई को उपदेश स्वरूप विवेचक आठवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. अरुणजी शास्त्री जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि श्री माणकचंदजी मुम्बई थे।

गोष्ठी में पण्डित पवित्रजी जैन आगरा ने वीतरागता की पोषक ही जिनवाणी कहलाती है, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद ने अनुयोगों की व्याख्यान पद्धति, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर ने अनुयोगों में दोष कल्पनाओं का निराकरण एवं पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर ने अनुयोगों में दिखाई देने वाले परस्पर विरोध का कारण विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित संदेशजी शास्त्री दिल्ली ने एवं संचालन पण्डित गौरवजी उखलकर जयपुर ने किया।

● **नौवाँ अधिकार** – दिनांक 28 जुलाई को मोक्षमार्ग का स्वरूप प्ररूपक नौवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री निशिकांतजी औरंगाबाद थे।

गोष्ठी में पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने आत्मा का हित मोक्ष ही है, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर ने पुरुषार्थ से ही मोक्षप्राप्ति, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर ने सम्यग्दर्शन के विभिन्न लक्षणों में समन्वय एवं डॉ. प्रमोदजी शास्त्री जयपुर ने सम्यक्त्व के भेद और उनका स्वरूप विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना एवं संचालन विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई ने किया। सभी गोष्ठियों का संयोजन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

मुक्त विद्यापीठ हेतु विशेष सूचना

श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के जून माह के परीक्षा पेपर लॉकडाउन के कारण ऑनलाइन ही भेजे जा रहे हैं। आप सभी पेपर 7742364541 वाट्सएप नम्बर से प्राप्त कर सकते हैं।

ज्ञानपहेली – मोक्षमार्गप्रकाशक–अध्याय 1 का उत्तर

			1 अ	ट	वी11					
		के18		मो12	त					
		व		क्ष	रा			गो13		त14
7 ध	व	ल		मा	ग			म्म		त्त्वा
		ज्ञा		र्ग	2 वि	शु	द्ध	ट		र्थ
	प16	न		प्र	ज्ञा			सा		सू
	र			का	3 न	म	स्का	र	मं15	त्र
	म	उ17		श					ग	
	4 औ	पा	धि	5 क	ल्या	ण	क	का	ल	
	दा	6 ध्या	न							श19
	रि	य								ब्द
	क					8 स20	म्य	ग्द	र्श	न
				9 व	र्ध	मा	न			य
						10 ज	म्बू	स्वा	मी	

ज्ञानपहेली अध्याय–1 के अन्तर्गत कुल 74 आत्मार्थियों के उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 20 लोगों के उत्तर पूरे सही हैं, ड्रॉ द्वारा निकाले गये विशिष्ट स्थान एवं सभी के नाम निम्नप्रकार हैं –

प्रथम स्थान – 1. ओजस टोडरका जैन, जयपुर

द्वितीय स्थान – 2. रुचिका पाण्ड्या कीर्तिनगर, जयपुर

तृतीय स्थान – 3. एम.सी. जैन, कोटा

सान्त्वना पुरस्कार – 4. केवलचंद जैन अशोकनगर, 5. मंजू जैन ग्वालियर, 6. अवनि जैन अशोकनगर, 7. तारा जैन इन्दौर, 8. शरद जैन इन्दौर।

अन्य सही उत्तर – 9. अल्पना जैन भीलवाड़ा, 10. अनिल जैन गाजियाबाद, 11. भानुकुमार जैन कोटा, 12. डॉ.के.सी. जैन छिन्दवाड़ा, 13. जितेन्द्रकुमार जैन नादियाड (गुज.), 14. कुसुम जैन कोटा, 15. मंगल गणेश जैन औरंगाबाद, 16. ओमकार गणेश टारटे जैन औरंगाबाद, 17. संगीता राकेश जैन मुम्बई, 18. श्वेता जैन वलसाड (गुज.), 19. स्वयंप्रभा दिलीप शाह हिम्मतनगर, 20. योगिता ठौरा भानपुरा।

नोट – क्रमांक 13 के उत्तर में गोम्मटसार, समयसार, नियमसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार को सही माना गया है।

– आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

समयसार विद्वत् संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल दिल्ली के द्वारा सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित समयसार विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 12 से 15 जुलाई तक अनेक उपलब्धियों के साथ संपन्न हुई।

संगोष्ठी के पूर्व दिनांक 8 से 11 जुलाई तक व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ, जिसके अन्तर्गत प्रातः श्री जिनेन्द्र पूजन पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट के संचालन में सम्पन्न हुई, तदुपरान्त पूज्य गुरुदेवश्री का समयसार गाथा 13 के आधार से व्याख्यान एवं प्रतिदिन विविध विद्वानों द्वारा उसका सार एवं प्रश्नोत्तर संचालित हुए।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रतिदिन **समयसार का सार** व्याख्यानमाला का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित संजयजी शास्त्री औरंगाबाद, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री पूना द्वारा व्याख्यान का लाभ मिला।

दिनांक 12 से 15 जुलाई के बीच में हुई संगोष्ठी के अध्यक्ष अजित प्रसादजी जैन राजपुर रोड दिल्ली, सचिव आदीशजी जैन रोहिणी–दिल्ली, निर्देशक डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, मुख्य संयोजक पण्डित नवीन निश्चलजी शास्त्री दिल्ली, संचालन एवं सहयोग पण्डित संजयजी शास्त्री बडामलहरा जयपुर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री शंकरनगर, संयोजकगण पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. विवेक जी शास्त्री इन्दौर, विदुषी प्रज्ञाजी जैन देवलाली, पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सुलभजी, झाँसी, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियाधाना, पण्डित संभवजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित संदेशजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित संयमजी उस्मानपुर, पण्डित संयमजी शास्त्री शंकर नगर, पण्डित तंदुलजी शास्त्री विश्वास नगर; मधुर स्वर पण्डित सुनीलजी शास्त्री एवं सुश्री श्वेतल जैन–काव्या जैन राजकोट, पूजन संचालक पण्डित समकितजी मोदी शास्त्री सागर तथा पण्डित समकितजी शास्त्री खनियाँधाना और मीडिया प्रभारी श्री दीपक राजजी जैन छिंदवाड़ा श्री सचिनजी मोदी खनियाधाना एवं श्री प्रद्युम्नजी फौजदार बड़ामलहरा थे।

संगोष्ठी में अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालने वाले विद्वत्गण डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, डॉ. शांतिकुमारजी पाटिल जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, प्रो. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित बिपिनजी जैन मुंबई, पण्डित प्रदीपजी झाँझरी उज्जैन, पण्डित जे.पी. दोशी मुंबई, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. सुजाताजी रोटे कुंभोज बाहुबली, डॉ. अरुण जी बण्ड जयपुर, डॉ. अनेकांतजी दिल्ली थे।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजीतप्रसादजी दिल्ली, श्री आदीशजी दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री बसंतभाई दोशी मुंबई, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री अशोकजी भोपाल, श्री अशोकजी बड़जात्या इंदौर, श्री अशोकजी नागपुर, श्री महीपालजी ज्ञायक बाँसवाड़ा, श्री पदमजी पहाड़िया इंदौर उपस्थित थे और विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रणधीरसिंह जी (मुमुक्षु मण्डल, दिल्ली), श्री पी.के. जैन रुड़की, श्री अभयजी लखनऊ, डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, श्री मुकेशजी मेरठ, श्री अमृतभाई मेहता अहमदाबाद, श्री जी. के. जैन हिदायत, श्री आशीषजी जैन चिदायतन, श्री प्रवीणजी लक्ष्मीनगर, पण्डित अजयकुमारजी जैन कोटा, मा. चन्द्रभानजी सिद्धायतन, पण्डित शुद्धात्म प्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर उपस्थित थे।

आध्यात्मिक एवं आगमिक प्रस्तुतियों के विशेषज्ञ के रूप में विद्वान् पण्डित अभयकुमारजी जैन, देवलाली, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. हेमचन्दजी देवलाली, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने अपना विशिष्ट योगदान दिया।

डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल, जयपुर, प्रो. वीरसागर जी शास्त्री, दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी जैन, देवलाली, पण्डित प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित रजनीभाईजी दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राजेन्द्रजी जैन, जबलपुर, पण्डित शैलेश भाई तलोद, ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खानियाँधाना, पण्डित देवेन्द्र कुमारजी जैन बिजौलिया एवं श्री पवनजी जैन मंगलायतन ने प्रवचनों के माध्यम से विशेष धर्म–प्रभावना में अपना योगदान दिया।

कार्यक्रम में 150 से अधिक विद्वानों का लाभ, सभी मुमुक्षु संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति, देश के 10 प्रान्तों के लोगों का सम्मेलन हुआ।

समस्त कार्यक्रम सर्वोदय अहिंसा चैनल पर प्रसारित किया गया।

– संयम शास्त्री, नागपुर

उपाध्याय वरिष्ठ का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय सत्र 2019–20 का उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा का परीक्षा परिणाम निम्नप्रकार रहा –

परीक्षा में कुल 32 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें 20 विद्यार्थी प्रथम, 11 द्वितीय एवं 1 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। प्रथम स्थान पर **अरविन्द जैन** पुत्र श्री आनंदकुमार जैन खड़ैरी (78.80%), द्वितीय स्थान पर **समर्थ जैन** पुत्र श्री अनिलकुमार जैन हरदा (77%) एवं तृतीय स्थान पर **सर्वज्ञ जैन** पुत्र श्री राकेशकुमार जैन गुढाचन्द्रजी (76.20%) रहे।

सभी विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

5

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दूसरा छन्द

इस **'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ'** गीत का दूसरा छन्द इसप्रकार है -

मैं रंग-राग से भिन्न,
भेद से भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड, चैतन्यपिण्ड,
निज रस में रमने वाला हूँ।।२।।

रंग अर्थात् पुद्गलादि पर पदार्थ, राग अर्थात् अपने आत्मा में उत्पन्न होने वाले मोह-राग-द्वेष भाव और भेद अर्थात् परलक्ष्य से उत्पन्न होने वाले विकल्प, नय सम्बन्धी विकल्प, गुणभेद, प्रदेशभेद व तत्संबंधी विकल्प।

हाँ, तो यह निश्चित हुआ कि मैं उक्त रंग, राग और भेद से भिन्न, अखण्ड, एक ज्ञानानन्दस्वभावी निराला आत्मतत्त्व हूँ।

ज्ञान-दर्शन रूप चैतन्य का अखण्ड पिण्ड मैं; निरन्तर निज में, निज अतीन्द्रिय आनन्द में रमण करने वाला भगवान आत्मा हूँ।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उक्त पंक्तियों पर बहुत रीझते थे। कहते थे **रंग, राग और भेद से भिन्न** इस एक पंक्ति में सारी दुनियाँ को समेट लिया है। गजब किया है भारिल्ल ने।

१. रंग शब्द में सभी संयोग आ जाते हैं।

२. राग में आत्मा में उत्पन्न होने वाले सभी विकारी भाव आते हैं।

३. भेद में गुणभेद, प्रदेशभेद, निर्मल पर्यायें आदि आती हैं।

इसप्रकार मैं सभी संयोगों, संयोगी भावों और सभी प्रकार के भेदभावों से भिन्न निराला आत्मतत्त्व हूँ। मैं चैतन्यभावों का अखण्डपिण्ड हूँ।

यहाँ 'मैं' शब्द का वाच्य क्या है ?- यह बात स्पष्ट करने के लिये **जैनदर्शन में चार प्रकार के व्यवहार नय और चार प्रकार के निश्चयनय कहे गये हैं। आत्मस्वरूप के प्रतिपादक होने से इन नयों को अध्यात्मनय कहते हैं।**

छह द्रव्यों के समुदायरूप इस विशाल विश्व में से हमें अपने उस आत्मा की खोज करनी है, **जिसके दर्शन से सम्यग्दर्शन, जिसके जानने से अर्थात् निजरूप जानने से सम्यग्ज्ञान और जिसमें जमने-रमने से सम्यग्चारित्र होता है।**

जब हम अपने आत्मा के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो स्त्री-पुत्र, मकान-जायदाद, रुपया-पैसा, नगर, देश, गाँव और सारी दुनियाँ तथा अपने शरीर में से हमें एक अपने आत्मा को खोज निकालना है।

यह काम हमें चार प्रकार के व्यवहार और चार प्रकार के निश्चयनयों के माध्यम से करना है।

चार प्रकार के व्यवहारनय इसप्रकार हैं -

(१) उपचरित असद्भूत व्यवहारनय।
(२) अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय।
(३) उपचरित सद्भूत व्यवहारनय।
(४) अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय।

इन्हें हम इस रूप में भी प्रस्तुत कर सकते हैं -

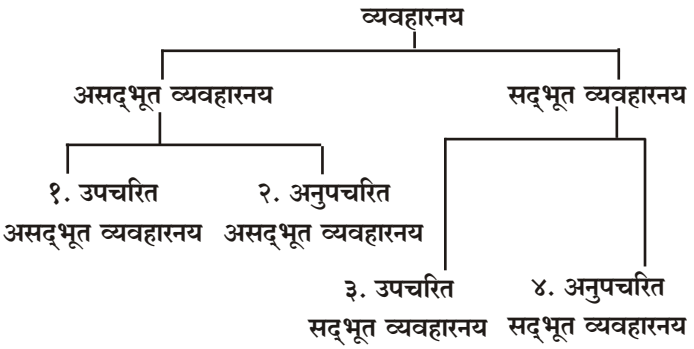

उपचरित सद्भूत व्यवहारनय को अशुद्धसद्भूत व्यवहारनय और अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय को शुद्ध-सद्भूत व्यवहारनय भी कहते हैं।

१. हमारे पुण्य-पाप के योग से जो भी संयोग हमारे इर्द-गिर्द हैं, उन्हें अपना कहने वाला, उनका कर्त्ता-भोक्ता स्वयं (आत्मा) को कहने वाला व्यवहारनय उपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।

यद्यपि यह कथन एकदम उपचरित है, असद्भूत है, एक प्रकार से है ही नहीं; **तथापि एक स्थिति तो है ही।**

२. शरीर और आत्मा में एकत्व स्थापित करने वाला, शरीर में ममत्व करने वाला, शारीरिक क्रियाओं का कर्त्ता-भोक्ता कहने वाला व्यवहारनय **अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।**

ये दोनों असद्भूत व्यवहारनय अहिंसक और सदाचारी जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। अत: इन्हें जिनागम में व्यवहार के रूप में स्वीकार किया गया है।

इन उपचरित और अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नयों से जिन-जिन को अपना कहा गया है; वे सब पदार्थ वस्तुत: अपने हैं नहीं, कहने मात्र के अपने हैं।

चारों प्रकार के व्यवहारनयों के कथन के सम्बन्ध में **निश्चयनय कहता है** कि तू ये नहीं है। तू तो एकमात्र ज्ञानानन्द स्वभावी चेतन तत्त्व है, अनन्त गुणों और असंख्य प्रदेशों का अखण्ड पिण्ड है। रंग, राग और भेद से भिन्न है। तुझे इन पर पदार्थों के सहयोग की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है। तू तो स्वयं में परिपूर्ण तत्त्व है। तुझमें तो कोई कमी है ही नहीं। पर से तेरा किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध है ही नहीं।

ये सभी बातें गीत की उक्त पंक्तियों में बताई गई हैं।

यद्यपि पाण्डे राजमलजी पंचाध्यायी में इन नयों को नय भी नहीं मानते, नयाभास कहते हैं। उनका कहना यह है कि जो शरीर को अपना कहे, स्त्री-पुत्रादि को अपना कहे, वह नय कैसे हो सकता है?

तथापि इन नयों की उपयोगिता के सन्दर्भ में **परमभाव-प्रकाशक नयचक्र** का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है -

''ये नय भी सर्वथा अनुपयोगी नहीं हैं, इनसे भी कुछ न कुछ वस्तुस्थिति स्पष्ट होती ही है। ये नय आत्मा का परपदार्थों के साथ किसप्रकार का संबंध है, इस तथ्य का उद्घाटन करते हैं।

इन असद्भूतव्यवहारनयों से सर्वथा इन्कार करने पर भी अनेक आपत्तियाँ खड़ी हो जाती है। जैसे -

१. उपचरित-असद्भूतव्यवहारनय से इन्कार करने पर जिन-मन्दिर और शिव-मन्दिर का भेद संभव नहीं हो सकेगा तथा माँ-बाप, स्त्री-पुत्रादि, मकानादि एवं नगर व देशादि को अपना कहने का व्यवहार भी संभव न होगा। ऐसी स्थिति में स्वस्त्री-परस्त्री, स्वगृह-परगृह एवं स्वदेश-परदेश के विभाग के बिना लौकिक मर्यादायें कैसे निभेंगी ?

२. अनुपचरित-असद्भूतव्यवहारनय के विषयभूत देही (शरीरस्थ आत्मा) को जीव नहीं मानने से त्रस-स्थावर जीवों को भी भस्म के समान मसल देने पर भी हिंसा नहीं होगी। ऐसा होने पर त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा के त्यागरूप अहिंसाणुव्रत और अहिंसामहाव्रत भी काल्पनिक ठहरेंगे।

इसीप्रकार तीर्थंकर भगवान की सर्वज्ञता भी संकट में पड़ जायेगी; क्योंकि केवली भगवान पर को अनुपचरित-असद्भूतव्यवहारनय से ही जानते हैं। **(क्रमश:)**

ऑनलाइन दशलक्षण पर्व हेतु निश्चित विद्वान

शासकीय निर्देशों एवं सभी की सुरक्षा के दृष्टिकोण से इस वर्ष आपके नगर में विद्वान डिजिटल रूप में पहुंचकर ही लाभ प्रदान कर सकेगा। इसके लिये समाज से दशलक्षण पर्व हेतु टोडरमल स्मारक को प्राप्त निमंत्रण पर विद्वान उस समाज के लिये निश्चित किया जायेगा; समाज और विद्वान परस्पर मिलकर प्रवचन/कक्षा का आयोजन ज़ूम एप पर करेंगे।

आवश्यकतानुसार 100/500/1000 लोगों की ज़ूम आई डी की व्यवस्था समाज द्वारा की जावेगी, जिस आई.डी. पर वहाँ के सारे कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। साथ ही टोडरमल स्मारक द्वारा भी राष्ट्रीय स्तर पर दशलक्षण महापर्व का आयोजन होगा। इसप्रकार आप स्थानीय एवं टोडरमल स्मारक दोनों ही स्तरों पर आयोजित दशलक्षण महापर्व के सभी कार्यक्रमों में ऑनलाइन सम्मिलित होकर धर्मलाभ ले सकेंगे। महापर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र ही डॉ. शांतिकुमारजी पाटील को उनके वाट्सएप नं. 9785649333 पर एवं **ptstjaipur@yahoo.com** पर ईमेल द्वारा भेजने का कष्ट करें।

महापर्व के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर निश्चित विद्वान (ऑनलाइन) निम्नानुसार हैं-

● **जयपुर से ऑनलाइन** - डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नीशूजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, पण्डित आकाशजी हलाज।

● **सीमंधर जिनालय जवेरी बाजार व दहिसर-मुम्बई :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ● **दिगम्बर जैन महासमिति राष्ट्रीय आयोजन :** डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर। ● **दादर व बोरीवली-मुम्बई :** ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ● **मलाड-मुम्बई :** पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, ● **उदयपुर हिरणमगरी :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री व पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, ● **छिन्दवाड़ा :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, ● **मंदसौर नरसिंहपुरा :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, **अलवर :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, ● **देवलाली :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना।

आपके नगर में भी विद्वान की आवश्यकता (ऑनलाइन) हो तो संपर्क करें। - डॉ. हुकमचंद भारिल्ल (महामंत्री- टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

विदेश में निश्चित विद्वान

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा दशलक्षण महापर्व पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा ऑनलाइन प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

का स्वरूप, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा पंचपरमेष्ठी : स्वरूप व पूज्यता, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री द्वारा कर्मबन्धन : स्वरूप व प्रक्रिया विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त बाल कक्षा का आयोजन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा हुआ।

समयसार विधान – प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'समयसार महामंडल विधान' डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री ने संपन्न कराया। विधान के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुम-महेन्द्रकुमारजी गंगवाल परिवार जयपुर, विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, श्रीमती सोनल भरतभाई मेहता सूरत, श्रीमती स्नेहलता शांतिलाल चौधरी भीलवाड़ा, श्रीमती अनुश्री सम्यक् कासलीवाल सूरत, श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर पंच ट्रस्ट दाहोद थे। विधान उद्घाटनकर्ता श्रीमती श्रीकांताबाई पूनमचंद छाबड़ा परिवार जयपुर एवं श्री मधुप निष्ठा अंकित भूरा परिवार जयपुर थे।

समापन समारोह – शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता श्री अनन्तभाई शेठ मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेन्द्रजी पाटनी वाशिम (एम.एल.ए.), श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री गजेन्द्रजी पाटनी (पी.सी.एस.) मुम्बई तथा विद्वत्वर्ग के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

समारोह का प्रारंभ ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अतिथियों के उद्बोधन के पश्चात् श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फ्रंट टीम व बैक टीम का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस ई-शिविर में 40 लोगों की समर्पित टीम ने प्रतिदिन लगभग 20 घंटे कार्य किया, जिसके लिये वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इसके अतिरिक्त सभी विद्वत्गण, विशिष्ट महानुभाव एवं सभी साधर्मीजन भी धन्यवाद के पात्र हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित 'सहजता', 'समाधि का सार', 'दो तरह के भगवान', 'जिसमें मेरा अपनापन है', 'ना बदलकर भी बदलना', 'यही है ध्यान...यही है योग', 'कोई किसी का क्यों करे?' आदि कृतियों का ऑडियो लोकार्पण पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने करवाया। सभी रचनाओं का ऑडियो श्री गौरवजी सौगानी व श्रीमती दीपशिखाजी सौगानी जयपुर की ध्वनि में रिकॉर्ड किया गया है।

अभूतपूर्व लाभ – शिविर में लगभग 65 विद्वानों द्वारा हुई धर्म प्रभावना को यूट्यूब पर 11 देशों में 2,43,114 व्यूअर्स ने 49411 घंटों तक देखा। प्रतिदिन के व्यूज़ के अनुसार लगभग 25 से 30 हजार व्यूज़ रहे और लगभग 5-6 हजार घंटों तक प्रतिदिन शिविर के कार्यक्रमों का लाभ लिया गया। इसके अतिरिक्त फेसबुक पर प्रतिदिन 8000 पोस्ट और ज़ूम एप पर लगभग 200-250 लोग प्रत्येक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। यह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

समापन समारोह का संचालन पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई ने किया। **– जिनकुमार शास्त्री, रूपेन्द्र शास्त्री, जयपुर**

साप्ताहिक गोष्ठी सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष दिनांक 18 जुलाई को '**हम और हमारा महाविद्यालय**' विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री उपस्थित थे। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर अमन जैन खनियांधाना ने 'टोडरमल से टोडरमल महाविद्यालय तक', पुष्प जैन आगरा ने 'आखिर क्यों लें इस महाविद्यालय में प्रवेश?', समकित जैन ईसागढ ने 'महाविद्यालय के प्रति मेरी कृतज्ञता', अनिमेष जैन राघौगढ ने 'महाविद्यालय का हमारे जीवन विकास में योगदान', अतिशय जैन चौरई ने 'विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या-अध्यात्मविद्या' एवं अमन जैन आरोन ने 'शास्त्री करने की सार्थकता-लौकिक अलौकिक परिप्रेक्ष्य में' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी के संयोजक पवित्र जैन आगरा, आप्तअनुशील जैन दमोह एवं अखिल जैन मण्डीदीप थे। मंगलाचरण संदेश जैन दिल्ली ने एवं संचालन संभव जैन दिल्ली व अंकुर जैन खड़ैरी ने किया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2020

प्रति,